शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश

डॉ.अनुकूल सोलंकी
भाषा विभाग (हिंदी)
शासकीय होलकर विज्ञान महाविद्यालय,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय साहित्य पर हिंदी उपन्यास विधा का अन्य विधाओं की तरह व्यापक प्रभाव पडा। प्रेमचन्द्र युग से लेकर वर्तमान काल तक के उपन्यासों में अनेक अभिनव प्रयोग किये। हिंदी उपन्यासों में सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं को लेखकों ने वर्ण्य विषय बनाया। इन उपन्यासकारों ने भारत की ग्रामीण सभ्यता और संस्कृति में व्याप्त विविध रंगों को अपने कथानक के माध्यम से उजागर किया। इसके स्याह-सफ़ेद पक्ष पर चली लेखनी ने अनेक चिंतकों को भारत के ग्रामीण जीवन में व्याप्त समस्याओं पर विचार करने पर मजबूर किया। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

ग्रामीण जीवन से समन्वित हिंदी उपन्यास साहित्य में की कथा वस्तु देशकाल चरित्र-चित्रण, भाषा उद्देश्य और शिल्प को ग्रामीण जीवन के साथ किसी विशेष समस्याओं पर बल दिया गया। हिंदी उपन्यासों में सर्वप्रथम आंचलिक शब्द का प्रयोग फणीश्वरनाथ रेणु ने सन् 1954 में प्रकाशित अपने उपन्यास मैला आँचल की भूमिका में किया। भारत वर्ष में विभिन्न ग्रामीण परिवेश के जन-जीवन को चित्रित करने के उद्देश्य से आंचलिक अर्थात ग्राम विशेष की कथा को प्रस्तुत किया। इसमें नागार्जुन के बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, रतिनाथ की चाची,. रांगेय राघव के काका, ष्धरती मेरा घर, फणीश्वरनाथ रेणु के परती परिकथा, तथा शिवप्रसाद सिंह का अलग-अलग वैतरणी आदि प्रमुख हैं। अंग्रेजी में जिसे लोकल (स्थानीय) कहा जाता है, उसे ही ग्रामीण (आंचलिक) उपन्यास कहा जाता है। स्वतंत्रता के पश्चात ग्रामीण परिवेश आचार-विचार, रहन-सहन, रूचि-अरूचि, पर्व, त्योहार, विवाह, वेश-भूषा, भाषा, राजनैतिक चेतना आदि जीवन शैली पर अनेक लेखको ने योगदान दिया। ग्रामीण परिवेश का महत्वपूर्ण उद्घाटन करने वाले अन्य उपन्यासकारों में राजेन्द्र अवस्थी ने 'जंगल के फूल', जाने कितनी आँखे, विवेकीय राय का बबूल, उदयराज सिंह का अंधेरे के विरूद्ध और सच्चिदानन्द का धूमकेतु, माटी की महक भी उल्लेखनीय है। ग्रामीण परिवेष में अंचल विशेष की प्रमुख समस्यायें, जिनमें आर्थिक पिछडापन अधिक उभरकर निकलता है। पंथ, धर्म, जाति, वैमनस्य, कुरीतियाँ, अंधविश्वास, हिंसा, अपराध, युवा पीढी का आक्रोश, असंतोष और नशा आधुनिकता बोध की पहचान है।

हिंदी उपन्यास और ग्रामीण परिवेश

सामाजिक चेतना पर अनेक उपन्यासकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से प्रकाश डाला। हिंदी उपन्यासों में नगरीयकरण के साथ-साथ व्यापक ग्रामीण परिवेश को नये प्रयोग और शिल्प के

साथ विस्तृत परिप्रेक्ष्य के साथ प्रस्तुत किया। स्वतंत्रता के पूर्व और पश्चात अनेक जटिल सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैचारिक सक्रांति को लेकर अभिनव चिंतन प्रस्तुत किये गये। उपन्यासकार अधिक वस्तुनिष्ठ और अप्रतिबद्ध दृष्टि से, सृष्टि को देखने लगा, बदलते ग्रामीण परिवेश के जीवन के विविध पहलूओं को प्रमेय बनाकर सैकडों उपन्यास लिखे गये। भारतीय जीवन शैली ने दो भागों में सिमटकर आंतरिक और बाह्य चिंतन को नगर और ग्राम में बांट दिया। नगरीकरण के साथ-साथ ग्रामीण भारत, जिसकी 70 प्रतिशत जनसंख्या ग्राम में निवास करती है, संक्रमणशील जीवन शैली के प्रति ग्रामीण रूचि बढी। आधुनिक भारत के निर्माण में अनेक समस्याओं ने ग्रामीण जीवन को प्रभावित किया। प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास काल में नष्ट प्राय विशालता को, ग्रामीण परिवेश को लेकर आविर्भूत हुई। इस परिवेश को अनेक महत्वपूर्ण और गहराई से चिंतन की धार मिली। नई कथा वस्तु, अभिनव शिल्प के अनेक रूप समास्याओं के यथार्थ प्रस्तुत किये गये। प्रेमचन्द्र युग से लेकर वर्तमानकाल में ग्रामीण परिवेश विशाल मात्रा में राष्ट्र की आर्थिक विषमता, सामाजिक एवं पारिवारिक स्नेह का शिथिलीकरण मजबूत जीवन मूल्यों का विद्यटन, चारित्रिक पतन, सभी वर्गो में व्याप्त नैतिक पतन आदि को निराशा, कुण्ठा, लक्ष्यहीन दिशा को अभिव्यकत करने की सचेत दृष्टि मिली।

ग्रामीण परिवेश को उकेरने में विस्तृत उपन्यासों में शिवप्रसाद सिंह का 'अलग-अलग वैतरणी', 'गली आगे मुडती है', राही मासूम रजा का 'आधा गांव', यशपाल का उपन्यास 'मेरी तेरी उसकी बात' महत्वपूर्ण माने जाते हैं। 'अलग-अलग वैतरणी' में उपन्यासकार ने बडे स्नेह और ममता के साथ ग्रामीण जनता को उनके जीवन में आने वाली समस्यायों को, लाख कोशिश करने पर भी निरंतर कष्ट सहन करने की बेचारगी और विवशता को मूर्त रूप दिया है। 'आधा गांव' में उपन्यासकार ने एक ग्राम के मुसलमानों के जीवन के चित्रण को प्रमुखता से उठाया और, उपन्यास क्षेत्र में कभी स्थान ना पा सके एक वर्ग के जीवन पर प्रकाश डाला है। ग्रामीण जीवन का समग्र चित्रण करने वाले आंचलिक उपन्यासों के विकास में फणीश्वारनाथ रेणु ने 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' में सुगठित शिल्प और शैली का प्रयोग किया। राम दरश मिश्र का 'पानी के प्रचीर' और हिमांशु श्रीवास्तव का 'नदी फिर बह चली' उत्तर प्रदेश के ग्रामीण परिवेश को उचित ढंग से प्रस्तुत करने वाली कृतियाँ है। उदय शंकर भट्ट का 'सागर, लहरें और मनुष्य' में मुम्बई के निकटवर्ती गांव वरसोवा के मछुआरों के सामाजिक जीवन के परिपेक्ष्य में पात्रों के रागात्मक संबंधों और उससे उत्पन्न विषम परिस्थितियों को चित्रित किया है। रामदरश मिश्र का 'पानी के प्रचीर' और हिमांशु श्रीवास्तव का 'नदी फिर बह चली' सुगठित कथाओं से युक्त होने पर ग्रामांचलीय परिवेश को मार्मिक रूप से उपस्थित करते हैं। बलभद्र ठाकुर के उपन्यास ग्रामीण और क्षेत्रीय जातियों के परिवेश की विशद पृष्ठभूमि के साथ ही विकसित होते हैं। मुक्तावती देवताओं के देश में तथा घने और बने में हिमालय प्रदेशों के लोक जीवन की और कैदियों के द्वीप में अंडमान द्वीप के लोगों की रूपरेखा मिलती है। कोसी निवासी ग्रामीण जनता के जीवन पर मायानन्द मिश्र का 'माटी के लोग सोने की नैया', कुमाउँ के आंचलिक ग्रामीण जीवन पर जगदीश चन्द्र पाण्डे का 'गंगा के तट' पर उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। प्रसिद्ध उपन्यासकार रांगेय

राघव का 'कब तक पुकारूं' में नट जाति के लोंगो की जीवन शैली को उजागर किया गया है। शैली और आचार-विचारों पर उल्लेखनीय उपन्यास है। घुमक्कड़ जाति के इन लोगों के विश्वासों, अंधविश्वासों, पारिवारिक संबंधों तथा भले-बुरे समाजिक व्यवहारों पर अपनी छाप छोडते हैं। इसमें ग्रमीण जीवन शैली का चित्रण व्यापक है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि ग्रामीण जीवन और प्रादेशिक कथा से सुगाठित इन आंचलिक उपन्यासों में हमारे तत्कालीन ग्रामीण जीवन तथा उनकी समस्याओं का परिचय मिलता है। इस रूप में उपन्यासकारों ने अपने चिंतन को अभिनव शिल्प और शैली के द्वारा विश्लेषण किया। आंचलिक जीवन से संबंधित योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु होने वाले प्रयास (तिकडमों) को प्रसिद्ध आंचलिक (ग्रामीण) उपन्यासकारों ने रेखांकित किया। वस्तुतः ये समस्यायें किसी अंचल (ग्राम) विशेष की ना होकर पूरे राष्ट्र का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती हैं। इन उपन्यासों को पढकर विस्तृत और विशाल राष्ट्र के छोटे-छोटे भूखंडो की आधुनिक चेतना का बोध होता है। अनेकता में एकता अर्थात विभिन्न संस्कृतियों वाले इस राष्ट्र में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों का चित्रण कर दूर अंचलों में चेतना जागृत करने का उल्लेखनीय प्रयास, ग्रामीण उपन्यासकारों ने किया।

संदर्भ ग्रंथ

1. *हिंदी साहित्य का इतिहास-संपादक डॉ..नगेन्द्र*
2. *हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी*